ISSN 0973-8541, HUMANITIES AND DEVELOPMENT, VOL.19, No.2, April – June,2024/22

''स्वयं सहायता समूह और महिला सशक्तीकरण : समाजशास्त्रीय अध्ययन''

ज्योतिमा सोनी, समाजशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

https://doi.org/10.61410/had.v19i2.184

सार संक्षेप

स्वयं सहायता समूह महिलाओं के सशक्तीकरण में महत्वपूर्ण योगदान कर रहे है क्योंकि उन समूहों में कार्य करने से उनके स्वाभिमान आत्मनिर्भता और क्षमताओं में विकास होता है। आज भारत दुनिया भर में महिलाओं द्वारा संचालित स्वयं सहायता समूहों के क्षेत्र में सर्वोच्च स्थान रखता है परन्तु हमारे देश की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक व राजनीतिक परिस्थियां महिला समूहों की गतिशीलता, व्यवहार्यता व साध्यता में अनेक चुनौतियां खड़ी करती है। इन चुनौतियों को कम करने में महिला संगठनों, समाजसेवी संस्थाओं व गैर सरकारी संगठनों द्वारा कार्य किया जा रहा है जिसके परिणामस्वरूप महिला समूहों की सक्रियता व सामाजिक आर्थिक रूप से भागीदारी व महिला सशक्तीकरण सही मायने में हो रहा है।

(**सूचक शब्द**– स्वयं सहायता समूह, महिला सशक्तिकरण, ग्रामीण महिलाएं, ग्रामीण समाज।)

''कोई राष्ट्र तभी सशक्त होगा जब उसकी महिला आबादी सशक्त होगी। एक राष्ट्र के निर्माण के लिए महिलाओं को सशक्त बनाना एक पूर्व शर्त है, जब महिलाएं सशक्त होती है तो समाज की स्थिरता सुनिश्चित होती है। महिलाओं का सशक्तिकरण इसलिए आवश्यक है क्योंकि उनके मूल्यों से एक अच्छे परिवार, समाज और अन्नतः एक अच्छे राष्ट्र का विकास होता है।'' (अब्दुल कलाम, 2013)

दुनिया में ऐसा कोई भी देश नही है जहां महिलाओं को हाशिए पर रखकर आर्थिक विकास संभव हुआ है। महिलाओं को विकास की मुख्य धारा से जोड़े बिना किसी समाज, राज्य व देश के सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक विकास की कल्पना भी नही की जा सकती। भारत की कुल आबादी की 50 प्रतिशत महिलाएं है जिनको सशक्त किये बिना विकसित सशक्त भारत का सपना पूरा नही किया जा सकता, विशेषकर ग्रामीण भारत की महिलाओं को सशक्त किये बिना। (जोशी 2019)

स्वयं सहायता समूह महिला सशक्तीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है जिसमें नोबेल पुरस्कार विजेता प्रो. डा. मोहम्मद यूनुस ने 1970 के दशक में गरीबों और समाज के निचले स्तर के लोगों विशेषकर महिलाओं के जीवन में आर्थिक समस्याओं को दूर करने के लिए महिलाओं को बिना किसी शर्त के ऋण देने की व्यवस्था की और आज लघुवित्त आन्दोलन विश्व के 7 हजार संस्थाओं द्वारा चलाया जा रहा है जिससे लगभग 1 करोड़ 6 लाख लोगों को रोजगार दिया जा चुका है। वास्तव में स्वयं सहायता समूह गाँव के व्यक्तियों का ऐसा संगठन है जो अपनी इच्छा से संगठित होकर, नियमित रूप से थोड़ी–थोड़ी बचत जमा करके सामूहिक निधि में जमा करते है और इसका उपयोग समूह के सदस्यों की आकस्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए करते हैं। इस प्रकार स्वयं सहायता समूहों में गरीब महिलाएँ विभिन्न कारणों जैसे किसी समस्या, सामाजिक समानता, आर्थिक समानता और एक–दूसरे की मदद करना आदि कारणों से एकजुट होती है। महिलाओं की स्वयं सहायता समूहों की सफलता को देखते हुए विश्व बैंक ने भी उन्हें प्रोत्साहन दिया है कि इस मॉडल को दूसरे के लिए भी अनुकूल किया जा सकता है। ये समूह महिला सशक्तिकरण के युग में प्रवेश करने की दिशा में गरीब महिलाओं को एक मंच प्रदान करते है।

भारत में स्वयं सहायता समूहों की नींव आजादी से पहले ही पड़ गयी थी परन्तु इसकी औपचारिक तौर पर शुरूआत 70 के दशक में अहमदाबाद के SEWA (सेल्फ इम्प्लायड विमेन एसोसिएशन) 1972 से हुयी और सेवा को आर्थिक रूप से कमजोर और स्वरोजगार से जुड़ी महिलाओं के यूनियन के रूप में जाना जाने लगा। इसकी संस्थापक इलाबेन भट्ट ने विमेन और माइक्रोफाइनेंस की अवधारणा को जन्म दिया इसके बाद देश में एसएचजी की शुरूआत हो गयी चाहे वह महाराष्ट्र की अन्नपूर्णा महिला मण्डल हो या तमिलनाडू का 'वर्किंग विमेंस फोरम' या मैसूर का मयारडा (MYRADA) भारत के हर कोने में महिला स्वयं सहायता समूहों का वर्चस्व बढ़ने लगा।

एसएचजी का प्रमुख कार्य महिलाओं में आत्मविश्वास विकसित करना है ताकि वे अपने निर्णय स्वयं ले सकें और साथ गरीबी उन्मूलन कर सकें। एसएचजी विभिन्न राष्ट्रीय और सहकारी समूहों के माध्यम से बिना किसी संपार्श्विक सुरक्षा (Collateral Security) और कम ब्याज दर के बहुत आसान शर्तों पर ऋण प्रदान करता है। यह सदस्यों के आपसी सहयोग विश्वास और परस्पर निर्भरता पर काम करता है इन सुविधाओं के कारण यह राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय देशों में लोकप्रियता प्राप्त कर रहा है। इसने सूक्ष्म ऋण के क्षेत्र में नयी क्रान्ति ला दी, जिससे महिलाओं का सामाजिक–आर्थिक सशक्तिकरण हुआ और साथ ही यह आत्मविश्वास, आत्मसुरक्षा और आत्मसम्मान की भावना में वृद्धि करता है इससे साक्षरता दर, बचत की आदतें स्वास्थ्य सम्बन्धी मुद्दों जैसे विभिन्न सामाजिक और आर्थिक कारकों में वृद्धि हुयी है।

स्वयं सहायता समूह के लाभः– स्वयं सहायता समूह सामाजिक व आर्थिक लाभ प्रदान करते है। इसका उद्देश्य महिलओं को सामाजिक आर्थिक रूप से व्यक्तिगत व सामूहिक दोनो तरीकों से स्वालम्बित करना है।

अनेक एसएचजी द्वारा प्रदान किया गया प्रशिक्षण महिलाओं के हुनर व ज्ञान में बढ़ोत्तरी करने उन्हें लघु व्यवसाय स्थापित करने के लिए तैयार करता है। एसएचजी की सहायता से महिलाओं ने अनेक क्षेत्र में प्रशिक्षण प्राप्त किया है जैसे मोमबत्ती बनाना, साड़ियाँ सिलना, कृषि, पशुपालन, दुग्ध उत्पादन, निर्माण कार्य, धातु हस्तशिल्प, खिलौना निमार्ण, शिक्षा आदि कार्यो में भागीदारी कर रहे है।

एसएचजी मॉडल ने ग्रामीण क्षेत्रों में अशिक्षित महिलाओं को घर से निकलने में एवं आर्थिक स्वतन्त्रता में मदद की है। यह मॉडल ग्रामीण महिलाओं के अनौपचारिक समूहों को बैंकिग व्यवस्था से जोड़ता है।

स्वयं सहायता समूह के सदस्य के रूप में काम करने से महिलाओं की स्वयं निर्णय लेने की शक्ति का विकास होता है। महिलाओं द्वारा बैंकों के साथ लेन–देन कागजी कार्यवाही आदि करने से उनमे आत्मविश्वास बढ़ता है। समूह की गतिविधियों के संचालन बैठकों में भाग लेने से महिलाओं की स्वयं निर्णय लेने की क्षमताओं का विकास होता है जिससे धीरे–धीरे परिवार और समुदाय में उनकी सोच को आवाज मिलती है।

तिवारी एवं कठारे (2020) ने अपने अध्ययन में सरकार की योजनाओं के माध्यम से महिला सशक्तिकरण की बात की है जिसमें स्वयं सहायता समूह के योगदान को महत्वपूर्ण बताया है, जो कि गरीब ग्रामीण भारतीय समाज के विकास के लिए आशा की एक किरण के रूप में उभर रहा है। परन्तु इसके साथ ही समूह से जुड़ने के लिए महिलाओं को कुछ चुनौतियों और समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जिस पर ध्यान देने की आवश्यकता है इसी संदर्भ में कोयम्बटूर जिले के मेट्टूपालयम तालुका के अध्ययन से पता चलता है कि स्वयं सहायता समूह से जुड़ने के बाद महिलाओं की

सामाजिक–आर्थिक स्थिति में काफी सुधार हुआ है परन्तु अभी भी कुछ उभरते मुद्दे व चुनौतियाँ हैं जिन पर लम्बे समय तक महिलाओं की भूमिका सुनिश्चित करने पर ध्यान देने की जरूरत पर बात की गयी है एवं एसएचजी मेट्टुपालयम तालूका में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। थंगामणि एवं मुथुसेल्वी, (2013)

खत्री, शर्मा एवं तिवारी (2018) ने इसी संदर्भ में अपने अध्ययन में बताया है कि महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण को और आगे बढ़ाने के लिए सूक्ष्म और लघु उद्योागों को बढ़ाया जायें जिससे स्वरोजगार में वृद्धि हो सके और इसमें स्वयं महिलाओं को रोजगार सृजन और प्रबन्धन करने के लिए बुनियादी स्वदेशी ज्ञान, कौशल क्षमता और संसाधन के रूप में सहायक है परन्तु अभी ऋण तक पहुँच विभिन्न फंडिंग एजेंसियों की कार्य प्रणाली के बारे में जानने व समझने की आवश्यकता पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

रेखा, अजाज एवं कुँवर (2019) ने भी अपने अध्ययन में स्वयं सहायता समूहों को समग्र सशक्तीकरण कार्यक्रम बताया है जो कि महिलाओं को प्रशिक्षित करने पर जोर दिया है जिससे वे अपने व्यवसाय को प्रशिक्षित करने पर जोर दिया है जिससे वे अपने व्यवसाय को कुशलतापूर्वक चलाने में सक्षम हों और अपने व्यवसाय को ले सकें। इससे यह पता चलता है कि महिलाओं का सामाजिक, आर्थिक व पारिवारिक सशक्तीकरण उतना ही आवश्यक है जितना कि किसी गाड़ी को आगे बढ़ाने के लिए पेट्रोल क्योंकि जिस तरह बिना पेट्रोल गाड़ी आगे नही जा सकती वैसे ही महिला सशक्तीकरण भी कोई राष्ट्र आगे नही बढ़ सकता।

कृतिका एवं पाण्डेय (2023) ने अपने अध्ययन में चम्पारण जिले के दरमाहा पंचायत के स्वयं सहायता समूह की बात की है जो स्वरोजगार, आर्थिक स्वतन्त्रता के साथ साक्षरता दर में सुधार, स्वास्थ्य देखभाल और बेहतर परिवार नियोजन पर भी काम कर रहे हैं। परन्तु यहाँ अशिक्षा के कारण स्वयं सहायता समूह के सदस्यों को व्यवसाय प्रबन्धन ऋण प्राप्ति की औपचारिकताओं को पूरा करने में कुछ कम पढ़े–लिखे लोग बैंकिंग , सुविधाओं व लेन–देन के कार्य सहजता से नहीं कर पाते जों एक चुनौती का विषय है इसके लिए प्रशिक्षण की व्यवस्था की जानी चाहिए जिससे सभी समूह के सदस्य बैंकिंग सुविधाओं व ऋण का लेन–देन आसानी से कर सकें इसके साथ यहाँ स्वयं सहायता समूह गरीबों को आसानी से ऋण उपलब्ध कराने व महिलाओं को सशक्त बनाने में प्रयासरत हैं।

विनोदिनी एवं वैजयन्ती (2016) ने अपने अध्ययन में स्वयं सहायता समूहों के महिला सशक्तीकरण और गरीबी को कम करने के तरीकों की पहचान की है जोकि महिलाओं में आय–व्यय और बचत की आदतों को विकसित कर उन्हें सशक्त बनाने का कार्य कर रहें हैं। यहाँ स्वयं सहायता समूह गरीब लोगों से जुड़कर इसकी नवीन पद्धतियाँ ग्रामीण विकास में लोगों की भागीदारी को बढ़ाने और समूह के लोगों के बीच विश्वास की कड़ी से जुड़ते है जो कि ग्रामीण महिलाओं में आत्मविश्वास और स्वतंत्रता की भावना विकसित कर रहे हैं जिससे आजीविका में वृद्धि हुयी है। अतः यह कहा जा सकता है कि तमिलनाडु में स्वयं सहायता समूह ग्रामीण विकास में बहुत अहम भूमिका निभा रहे हैं।

परवीन एवं अली (2004) के इसी संदर्भ में बीकानेर जिले के अध्ययन से स्पष्ट पता चलता है कि स्वयं सहायता समूह महिलाओं के सामाजिक आर्थिक विकास के साथ निर्णय शक्ति बढ़ाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं साथ ही उनके जीवन स्तर मे सुधार, बचत की आदत विकसित करने के साथ उत्पादक गतिविधियों से अतिरिक्त आय सृजित करने में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

सालगावंर एव सालगावंर (2009) "पंचायत और महिला स्वयं सहायता समूह सहजीवन को समझना" अपने अध्ययन में पंचायत और महिला स्वयं सहायता समूहों को एक–दूसरे का पूरक बताया है– और दोनों में राजनीतिक स्थान के लिए कोई प्रतिस्पर्धा नही है। हांलाकि पंचायत निकाय अपने

गांव में महिला स्वयं सहायता समूह को शुरू करने की पहल तो कर रहे है परन्तु वे समूहो के जरूरतों के प्रति संवेदनशील नही है, जैसे उन्हें उत्पादन गतिविध के लिए जगह की व्यवस्था करना, तैयार माल के लिए परिवहन व स्थानीय बाजार आदि इसलिए आवश्यक है कि महिलाएँ संसाधनों पर नियंत्रण रखने और निर्णय लेने में स्वतन्त्र एवं सक्षम बनें। यहाँ इस बात पर जोर दिया गया है कि महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए मुख्यतः सामाजिक संस्थानों और प्रयासों को बदलने महिलाओं के दायित्व और जिम्मेदारियों और संसाधनों पर उनकी बागडोर के बीच संतुलन बनाने की हैं जिससे मौजूदा सत्ता संरचनाओं के माध्यम से लैंगिक न्यायपूर्ण समाज में बदला जा सकें और ग्रामीण महिलाएँ न केवल विकास की लाभार्थी बनें बल्कि इसमे महत्वपूर्ण योगदान कर सकें इस पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

सरन, (2024) ने महिलाओं के सामाजिक–आर्थिक विकास, रोजगार सृजन, सामुदायिक विकास और लैंगिक समानता में एसएचजी फेडरेशन की भूमिका और प्रभावों की बात की है, जो कि प्रेरक शक्ति के रूप में कार्य कर रहा है। उन्होंने गैर सरकारी संगठन 'हैंड इन हैंड इण्डिया' की मध्य प्रदेश में महिला सशक्तिकरण, एकीकृत सामुदायिक विकास, लैंगिक समानता के लिए सक्रिय रूप से कार्यरत है। यह महिलाओं और समूहों में सकारात्मक बदलाव लाने और महिला समूहों को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है, परन्तु इसके साथ यह भी ध्यान देने की आवश्यकता है कि समूह से जुड़ी महिलाएँ अपने कार्य के प्रति जागरूक हो और अन्य ग्रामीण महिलाओं के लिए प्रेरणास्त्रोत बनें जिससे उनमें भी आर्थिक गतिविधियों व स्वरोजगार से जुड़ने व आत्मनिर्भर बनने की प्रबल इच्छा जाग्रत हों।

जैसा कि अनेक शोधपत्रों के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि स्वयं सहायता समूह महिलाओं के सामाजिक–आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है। समूहों के माध्यम से ही समाज में महिलाओं का वर्चस्व बढ़ा है। उनमें निर्णय शक्ति का विकास हुआ है परन्तु साथ ही साथ समूह से जुड़ने व समूह को बेहतर ढंग से संचालित करने के लिए कुछ चुनौतियों का भी सामना करना पड़ता है। जो ध्यान देने योग्य महत्पूर्ण बिन्दु है। उसके साथ ही साथ समूह से जुड़े प्रत्येक सदस्य को समूह से जुड़े कार्यों को करने का समान रूप से अवसर मिलना चाहिए जिससे सभी में आत्मविश्वास व कार्यक्षमता का विकास हो सके।

अन्ततः यह कहा जा सकता है कि समूह की क्रियाओं में भाग लेकर महिलाएं विभिन्न कार्यों से जुड़कर विकास के नये आयाम से जुड़ गयी है तथा समूह के स्तर पर नेतृत्व करने के साथ–साथ परिवार एवं समुदाय के स्तर पर नेतृत्व करने की क्षमता भी उभरी है। महिला सशक्तीकरण का प्राथमिक उद्देश्य ही यही है कि उनके अपने अधिकारों प्रति जागरूक किया जाये और परिवार में निर्णय के स्तर पर ज्यादा से ज्यादा भागीदारी बढ़ाई जाये।

इस तरह ग्रामीण महिलओं को स्वावलम्बी और आत्मनिर्भर बनाने में स्वयं सहायता समूह महत्वपर्ण भूमिका निभा रहे हैं जिसके अन्तर्गत स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोजगार योजना की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इसके तहत अब तक 30 हजार से ज्यादा स्वयं सहायता समूहों का गठन किया जा चुका है इन समूहों से जुड़ने के बाद महिलाओं पर किये गये घरेलु हिंसा तथा शोषण पर रोक लगाने में मदद मिली है। इस प्रकार स्वयं सहायता समूह ने महिलाओं को विकास की मुख्य धारा से जोड़कर उनके सामाजिक आर्थिक एवं राजनीतिक जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तन लाकर सशक्तिकरण की दिशा में कदम बढ़ाया है, जिससे ग्रामीण महिलाओं अपनी एक विशेष पहचान तो बना ही रही है साथ ही साथ गॉव के विकास में अहम भूमिका भी निभा रही है, जो कि सराहनीय है।

सरकार भी ग्रामीण क्षेत्रों में तेजी से विकास और सामाजिक व आर्थिक परिवर्तन लाने के लिए प्रयासरत है। इसी दिशा में महिलाओं का जीवन स्तर सुधारने व विकास कार्य में उनकी प्रभावी

भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए प्रयासरत है। स्वयं सहायता समूह ग्रामीण निर्धन महिलाओं द्वारा स्वेच्छाा से गठित समूह है, जिसमें समूह की महिलाएं जितनी चाहें स्वेच्छा से बचत करती हैं उसका अंशदान एक सम्मिलित निधि में जमा करने तथा समूह के सदस्यों को उत्पादक तथा आपातकालीन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए ऋण के रूप में देने के लिए परस्पर सहमत होती है। ग्रामीण विकास के लिए आर्थिक मदद तथा सामाजिक परिवर्तन दोनों ही महत्वपूर्ण है। अतः सशक्तीकरण के लिए महिला स्वयं सहायता समूह इसलिए आवश्यक है ताकि ग्रामिण महिलाएँ संगठित होकर सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्र में स्वयं के प्रयासों से कुछ कर पाने में सक्षम हों।

सन्दर्भः–

1- Joshi , Uma and Kanchan Pandey (2019) 'Self help Group and woman empowerment '', Journal of advances and scholarly researches in allied education, Vol – 16 Issue no 9 pp -02-08.

2- Khatri, Aastha, sangeeta Sharma and adya tiwari, (2018) "Emprorement Development through SHG; A weapon for economic empowerment off several woman "International Journal o advances in Agriculture sciece and Technology Vol – 5 Issue No -3 PP 58-63.

3- Kritika and Pandey, (2023) "Rold of self help Groups (SHGS) in woman education and enterprenership development" International Jounal of Home Science Vol -9(3) PP-183-185.

4- Parveen, Sharaj and Ali, (2024) "Woman Empowerment through Enterpremercial Activates : A financial inclusion (SHG) approach "A Global Journal of social sciences. Vol V, Issue -1.

5- Rekha Ajaz and Kunwar,(2014) "Study of social, economic and family status of woman Entrepreneurs of self help Groups "International Journal of Home Science. Vol -5(3) PP-138-140.

6- Saran, Madhu (2024). "Role of SHG Federations in prompting economic and social empowerment o women empirical evidence form A Project in Madhya Pradesh, India "International Multidisplinary Research Journal Vol – 1 PP-33-40.

7- Tiwari, Ritu and Hemant Healthcare, (2020) "The study o the contribution of self help group in women empowerment" Elementary education online vol-19 issue no -4, pp-3913-3917.

8- Thangamani, S. and S. Muthuselvi (2015) "A study on woman empowerment through self help Groups with special reference to Muthupalayam Talak in compatore district" Journal of Business and management V-B Issue no 6. 99-17-24.

9- Vinodhini R.L. and P. Vaijayanti, 2006 " Self Help Group and Socio-Economic Empowerment of women in rural India" "Indian Journal of Science and Technology. Vol.9(27).

10- Ncert.nic.in.

11- Pravakta.com.

12- www.mlsu.ac.in.